SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में कामकाजी महिलाओं का संघर्ष

अनीता गुप्ता, (Ph.D.), शोध निदेशक, हिंदी विभाग
सेठ मंगलचन्द चौधरी राज महाविद्यालय आबू रोड़, जिला सिरोही, राजस्थान, भारत
सविता लौरी, शोधार्थी, हिंदी विभाग
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

अनीता गुप्ता, (Ph.D.), शोध निदेशक, हिंदी विभाग,
सेठ मंगलचन्द चौधरी राज महाविद्यालय आबू रोड़,
जिला सिरोही, राजस्थान, भारत,
सविता लौरी, शोधार्थी, हिंदी विभाग
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/09/2022
Revised on : -----
Accepted on : 01/10/2022
Plagiarism : 01% on 27/09/2022

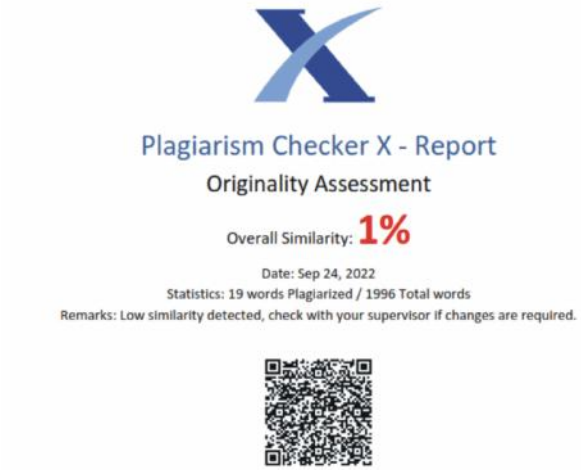

शोध सार

इस भौतिकवादी युग में मानव की आर्थिक आवश्यकताएं दिन प्रतिदिन पैर पसार रही है। हमें आजादी मिले 75 वर्ष हो गए है। इन वर्षों में महिला सशक्तिकरण का दायरा अत्यधिक बढ़ा है। वर्तमान नारी ने अपने बूते हम मोर्चे पर अपनी सफलता का परचम लहराया है। हमारे देश में लिंगानुपात की असमानता व महिला विरोधी मानसिकता समाज की सबसे बड़ी समस्या है। आज की नारी अपने परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अर्थोपार्जन कर रही है। उसका घर की चारदीवारी से निकल कर अर्थोपार्जन करना इतना सहज और सरल नहीं है। उसे अनेक आंतरिक व बाह्य संघर्षों का सामना करना पड़ता हैं। आधुनिक हिन्दी कथाकारों ने कामकाजी नारी की इस पीड़ा को स्वयं अनुभूत करके अपनी लेखनी से अभिभूत किया है। इन्हीं कथाकारों मे हिन्दी साहित्य की मूर्धन्य कथाकार चित्रा मुद्गल हैं। चित्रा जी ऐसी लेखिका है, जिन्होंने हमारे समाज में व्याप्त विसंगतियों को बहुत नजदीक से देख है और अनुभव किया है। सन् 1990 में प्रकाशित उपन्यास "एक जमीन अपनी" इनका प्रथम उपन्यास था। इस उपन्यास का केन्द्र भी कामकाजी संघर्षशील महिला है। उपन्यास "आवां" में भी इन्होंने कामकाजी महिलाओं की समस्याओं की ओर पाठकों का ध्यान खींचा है। चित्रा जी की सम्पूर्ण कहानियाँ "आदि–अनादि" नाम से तीन खंड़ों मे प्रकाशित है। इनकी कहानियों में 'दरमियान', ट्रेन छूटने तक', 'केंचुल', 'त्रिशंकु', 'बावजूद इसके', 'लाक्षागृह', 'इस हमाम में', 'भूख', 'लेन', 'प्रमोशन', 'जब तक विमलाऐं है' ऐसी कहानियाँ हैं जिनमें शिक्षित, अशिक्षित, मजदूर, सर्वहारा वर्ग की कामकाजी महिलाओं के संघर्ष को लेखिका ने चित्रित किया हैं। चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य के माध्यम से कामकाजी महिलाओं की आंतरिक व बाह्य

समस्याओं का अध्ययन व विश्लेषण करना ही इस शोध कार्य का उद्देश्य है।

मुख्य शब्द

कामकाजी महिला, संघर्ष, अर्थोपार्जन, शारीरिक शोषण, मानसिक शोषण, विज्ञापन जगत.

जीवन परिचय

आधुनिक हिन्दी साहित्य की मूर्धन्य कथाकार चित्रा मुद्गल कथा साहित्य का एक ऐसा नाम है, जिन्हें उनकी लेखनी ने हिन्दी साहित्य में एक अलग ही पहचान दी। चित्रा जी एक ऐसी लेखिका हैं, जिन्होंने हमारे समाज में व्याप्त विसंगतियों को बहुत ही करीब से देखा है व अनुभव किया है। वे बाल्यावस्था से ही रूढ़ी विरोधी रही हैं। चित्रा जी आधुनिक कथा साहित्य की महिला लेखिकाओं में अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं। बहुमुखी प्रतिभा की धनी चित्रा जी का जन्म 10 दिसम्बर 1944 को चेन्नई में हुआ। मुंबई में शिक्षित चित्रा जी उत्तर प्रदेश के उन्नाव जनपद के बैसवाड़ा के गांव निहालीखेड़ा के जंमीदार घराने की बेटी हैं। इनके पिता का नाम ठाकुर प्रताप सिंह व माता का नाम विमला देवी है। आर्थिक, सामाजिक व मानव अधिकरों के लिए कार्य करने वाले संगठनों व समुदायों खासकर दलितों, श्रमिकों, महिलाओं व बुर्जुगों के मध्य रह कर उन्होंने उनके अधिकारों के लिए विभिन्न आंदोलनों में भाग लिया।

उनकी प्रथम कहानी 'सफेद–सोनारा' कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत होकर 25 अक्टूबर, 1964 को 'नवभारत टाइम्स' के रविवारीय अंक में प्रकाशित हुई। 7 फरवरी 1965 को उन्होंने ब्राह्मण परिवार से ताल्लुक रखने वाले अवधनारायण मुद्गल जी से प्रेम विवाह किया। 15 अप्रैल 2015 को लम्बी बीमारी के कारण अवध जी का निधन हो गया। चित्रा जी के दो बच्चे है, बेटा राजीव और छोटी बेटी अपर्णा। दुर्भाग्यवश विवाह के नौ माह बाद एक सड़क दुर्घटना में इनकी बेटी–दामाद की मृत्यु हो गई। वर्तमान में इनके परिवार मे बेटा राजीव, बहू शैली, पोता शाश्वत और जुड़वा पोतियाँ अनघा और आद्या है।

चित्रा जी का जीवन संघर्षपूर्ण रहा है। इतने संघर्षों का सामना करने के बाद भी उन्होंने कभी हार नहीं मानी। "चित्रा जी का व्यक्तित्व इसी श्रेणी का है। वे अपना दु:ख किसी के सामने प्रकट नहीं करती। वे सौम्य, सरल, शांत और चुंबकीय व्यक्तित्व की मल्लिका हैं। उनसे प्रभावित हुए बिना कोई शख्स नहीं रह सकता। उनका प्रभामंडल, उनका ओज और उनका सरल–सादा व्यक्तित्व देखते ही बनता है।"[1]

लेखन कार्य

सन् 1990 में चित्रा जी का प्रथम उपन्यास 'एक जमीन अपनी' विज्ञापन क्षेत्र पर लिखा गया प्रथम उपन्यास था। इसके पश्चात् 'आवां', 'गिलिगडु', 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 –नाला सोपारा' और वर्ष 2022 में इनका पांचवां उपन्यास 'नकटौरा' प्रकाशित हुआ। उनकी सम्पूर्ण कहानियां 'आदि–अनादि' नाम से तीन खंडों मे प्रकाशित हैं। 'पेंटिंग अकेली हैं' कहानी संग्रह के अतिरिक्त अब तक उनके तीन नाटक, ग्यारह कहानी संग्रह, दो वैचारिक निबंध संग्रह की पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी है।

सन् 2003 में उपन्यास 'आवां' के लिए के. के. बिड़ला फाउंडेशन के तेरहवें 'व्यास सम्मान' से सम्मानित होने वाली चित्रा जी प्रथम महिला साहित्यकार हैं। इनके चतुर्थ उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 – नाला सोपारा' को प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी सम्मान–2018 से सम्मानित किया गया। इनका तीसरा उपन्यास 'गिलिगडु' अपनी विशिष्ट कथा के लिए प्रशंसित और पुरस्कृत हो चुका है।

चित्रा मुद्गल का कथा साहित्यः कामकाजी महिलाओं का संघर्ष

चित्रा जी समाज में नारी के महत्व के विषय में कहती हैं कि "वह एक महत्वपूर्ण हस्ती है, समाज में उसकी बड़ी भागीदारी हैं – माँ के रूप में, बहन के रूप में, बेटी के रूप में, जो सारे दायित्वों का निभाती रही, लेकिन अब कहीं उसके मन की बात भी होनी चाहिए और शिक्षा का इसमें काफी योगदान रहा।"[2]

चित्रा जी के कथा साहित्य को हम दो भागों मे वर्गीकृत करके देख सकते हैं – प्रथम कहानियां और द्वितीय उपन्यास। इनकी कहानियां तीन वर्गों स्त्री, श्रमिक और सर्वहारा वर्ग के संघर्ष का अध्ययन करती हैं। इनकी कहानियाँ हजारों –लाखों लोगों के जीवन का चित्रण है, जिनमें तीन वर्गो का संघर्ष दिखाई देता है। इनके कहानी संग्रह 'आदि–अनादि' के तीनों खंडों में कई कहानियाँ कामकाजी महिलाओं के जीवन के संघर्ष को दर्शाती हैं। उनकी कहानियों में 'ट्रेन छूटने तक', 'सफेद–सोनारा', 'केंचुल', 'त्रिशंकु', 'बावजूद इसके', 'लाक्षागृह', 'इस हमाम में', 'भूख', 'चेहरें', ताशमहल', 'लेन', 'दरमियान', 'हस्तक्षेप', 'मुआवजा', 'प्रमोशन', 'जब तक विमलाएँ है' ऐसी कहानियां हैं, जिनमें शिक्षित, अशिक्षित, मजदूर, सर्वहारा वर्ग की कामकाजी महिलाओं के संघर्षों को चित्रित किया है।

"चित्रा मुद्गल के साहित्य में अधीनस्थता के ऐतिहासिक व सामाजिक कारणों की तलाश करते हुए साहित्य में उनकी उपस्थिति का रेखांकन करने का प्रयास किया गया है। नारीवाद वस्तुतः न कोई आंदोलन हैं, न ही कोई नारा बल्कि वैचारिक, मानसिक एवं भावात्मक धरातल पर स्त्री द्वारा स्त्री से समाज की स्वार्थसिद्धि के लिए किया जाने वाला एक सार्थक, सोद्देश्य संघर्ष है।"(3)

मूर्धन्य कथाकार चित्रा जी के कथा–साहित्य में नारी संघर्ष का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके पात्रों की संघर्षशीलता ही उनके लेखन का संदेश होती है। चित्रा जी ने अपने जीवन में अनेक संघर्षों का सामना किया है। वे मानती हैं कि संघर्षों से अर्जित आत्मविश्वास कठिन क्षणों में भी कभी अकेला नहीं होने देता। उन्होंने कामकाजी महिलाओं के अधिकारों के लिए (बाईयों व मुंबई की झोपड़ पट्टियों की बर्तन व झाड़ू–पोंछे का काम करने वाली) काम किया। उन् 1965 से 1972 तक वे 'जागरण'नामक संस्था की सक्रिय कार्यकर्ता रहीं। यह संस्था भी गरीब व पीड़ित महिलाओं के अधिकारों और हितों की रक्षा के लिए कार्यरत है।

चित्रा जी ने नारी जीवन के संघर्षों को स्वयं भी देखा और बहुत करीब से अनुभव किया था। वे नारी मन की पीड़ा से भली–भांति परिचित थी। उन्होंने अपने जीवन में कुछ समय के लिए नौकरी भी की। उन्होंने एक स्कूल में और बाद में एक विज्ञापन संस्थान में नौकरी की। उन्होंने स्वयं एक कामकाजी नारी के संघर्षों का देखा था। वे स्वयं कहती है "मगर बहुत जल्दी समझ आ गया कि मेरा चेतन नौकरी के अनुशासन और उन समझौतो को स्वीकार करने के लिए नहीं है, जिन्हें स्वीकारें बगैर वहाँ बने रहना मुमकिन नहीं था।"[4]

चित्रा जी ने स्वयं कामकाजी नारी के संघर्षों की पीड़ा को अनुभव किया था और उसी संघर्ष की पीड़ा को अपने कथा साहित्य में चित्रित भी किया है।

'एक जमीन अपनी' उपन्यास में भी चित्रा जी ने अपने जीवन के वास्तविक अनुभव को साझा किया है। उपन्यास की मुख्य कामकाजी नारी पात्र अंकिता का जीवन संघर्ष से भरा हुआ है। अंकिता विज्ञापन क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए कठिन संघर्षों का सामना करती है। अंकिता का जीवन उपन्यास में एक संघर्शषील नारी का प्रतीक है। 'एक जमीन अपनी' उपन्यास में विज्ञापन जगत के कटु सत्यों को चित्रा जी ने रेखांकित किया है कि किस प्रकार इस क्षेत्र मे काम करने वाली महिलाओं का शारीरिक व मानसिक शोषण किया जाता है। इस उपन्यास में नारी के सामने आने वाली अनेक चुनौतियां हैं और इन चुनौतियों का सामना करने का तरीका प्रत्येक पात्र का अलग–अलग है। लेखिका चित्रा जी के अनुसार विज्ञापन के क्षेत्र में अनेक प्रकार की समस्याएं विद्यमान हैं। उन्होंने उपन्यास की मुख्य पात्र अंकिता के माध्यम से इस क्षेत्र के शोषण के गहरे दलदल को हमारे सामने खोलने का साहस किया है। इस उपन्यास की मुख्य धारा विज्ञापन क्षेत्र एवं स्त्री विमर्श है।

चित्रा जी के दूसरें उपन्यास 'आवां' में मुंबई जैसे महानगर के प्रतानगनर के चारों और फैली हुई मजदूरों की बस्ती की कथा चित्रित है। इस उपन्यास का मूल श्रमिक संघर्ष है। उपन्यास में कई उपकथाएं हैं, जिनमें कामकाजी महिला चरित्रों के संघर्ष को लेखिका ने लिखा है। उपन्यास की मुख्य पात्र एक श्रमिक की बेटी नमिता पांडे है। उपन्यास में चित्रा जी ने ऐसी कामकाजी महिला पात्रों की रचना की है, जो अपने परिवार के लिए अपने पैरो पर खड़े होने का प्रयास करती है। जब वे अर्थोपार्जन करती है तो उन्हें कई आंतरिक व बाह्य संघर्षों का सामना करना पड़ता है। नमिता का संघर्ष तो उपन्यास की शुरूआत से प्रारंभ होकर उपन्यास के अंत तक चलता है। नमिता का

शारीरिक व मानसिक शोषण हमें उपन्यास में स्पष्टतः देखने को मिलता है। उपन्यास में घर की आर्थिक परेशानियों को दूर करने के लिए नमिता अपने सपनों का आवां अपने हृदय मे लेकर अपने सफर पर निकलती है। 'कामगार अघाड़ी' में अन्ना साहब नमिता का मानसिक शोषण करते हैं। मजबूरन नमिता को वह नौकरी छोड़नी पड़ती है। अन्ना साहब को इस बात का कोई पछतावा भी नहीं होताः "मेरे भीतर ऐसा कोई भाव नहीं उठ रहा जो मुझे बाध्य करें कि मैंने जो भी किया है, अपराध किया है। अपनी ऊर्जा का अपव्यय मैं उस पश्चाताप में नही कर सकता।"[5]

इसके बाद नमिता का शोषण आभूषण व्यवसायी संजय कनोई द्वारा किया जाता है। जब नमिता के सामने उसका सच सामने आता हैं तो वह अंदर तक टूट जाती है। नमिता के अलावा उपन्यास में अन्य कामकाजी नारी पात्रों सुनंदा, किशोरी बाई, निलम्मा, पंढरी बाई, गौतमी के जीवन संघर्ष का भी चित्रण चित्रा जी ने चित्रित किया है।

वहीं चित्रा जी के तृतीय उपन्यास 'गिलिगडु' की विषयवस्तु दो वृद्धजनों को केन्द्र में रख कर लिखी गई है। इसमें महिला विमर्श दृष्टिगत नहीं होता है। इस उपन्यास में केवल एक कामकाजी महिला पात्र सुनगुनियां का संघर्ष लेखिका ने चित्रित किया है। इस उपन्यास में चित्रा जी ने सुनगुनियां के माध्यम से निम्नवर्गीय विधवा नारी के संघर्ष को बयान किया है। अपने पति की मृत्यु के बाद वह स्वाभिमान के साथ अपने बच्चों को पालने के लिए लोगों के घरों मे झाड़ू–पोंछा व साफ–सफाई का काम करती है। उसके घर वालों ने भी उसे सहारा नहीं दिया। वह भाग कर बाबू जसवंत सिंह जी के घर वापस आती है। वह जसवंत सिंह जी से कहती हैं: "जाने को मालिक दिल्ली जा रहे हैं, बेटे–बहू के ढियां। राजी–खुशी रहे, पर मालिक अपनी देहरी दुआर की सुध बनाए रखेंगे, गू–मूत उठाने का सौभाग्य गरीब सुनगुनियां को भी दे।"[6]

लेखिका ने सुनगुनियां जैसी सशक्त व स्वाभिमानी नारी के चरित्र को इस उपन्यास में स्थान दिया है। सुनगुनियां कठिन परिश्रमी, कष्टों के सामने न थकने वाली और विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष कर आगे बढ़ने वाली नारी है। इनका चतुर्थ उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 – नाला सोपारा' की विषयवस्तु महिला विषयक न होकर किन्नरों की समस्याओं पर आधारित है। उनका पांचवां उपन्यास 'नकटौरा' वर्ष 2022 में प्रकाशित हुआ है। यह उपन्यास स्त्री विषयक है। जैसा कि इस उपन्यास के शीर्षक से पता चलता हैं, यह महिलाओं को एक रात में मिलने वाली स्वायत्तता के प्रसंग से प्रेरित होकर कथाकार द्वारा लिखा गया है। लेखिका के इस उपन्यास की रचना मूलतः आत्मकथा के निकट है। उपन्यास 'नकटौरा' में एक सामाजिक कार्यकर्ता महिला को किस प्रकार घर और बाहर की चुनौतियों से संघर्ष करना पड़ता है, इसका चित्रण किया गया है।

समकालीन हिन्दी साहित्य में चित्रा मुद्गल भारतीय नारी की गरिमा का संपूर्ण प्रतिनिधित्व करती दिखाई देती है। वे अपने लेखन के प्रति तो जागरूक व मुखर है। सामाजिक व पारिवारिक दायित्वों के साथ–साथ साहित्य के प्रति भी उनका चिंतन व सृजन अनवरत जारी है। चित्रा जी ने जब विज्ञापन क्षेत्र में काम किया तो उन्हें अनुभव हुआ कि एक कामकाजी महिला को किस प्रकार अपने ही कार्यक्षेत्र में संघर्ष करना पड़ता है। वे अपने एक साक्षात्कार में कहती है "'जागरण' से जुड़ी स्त्री उत्पीड़न की दहला देने वाली असमाप्त फेहिरस्त और उनसे मुठभेड़ करने के सीमित साधनों की कचोट तब और भी बढ़ गई, जब विज्ञापन जगत में काम करते हुए निरन्तर यह अनुभव हुआ कि देश की आधी आबादी की समता और सम्मान अर्जन का संघर्ष किसी सीमा तक अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए भी निष्प्रभावी सिद्ध हो रहा है।"[7]

निष्कर्ष

समकालीन हिंदी साहित्य में चित्रा जी ने अपने कथा साहित्य में अलग–अलग विषय वस्तु को चुन कर लेखन कार्य किया है। उनके कथा साहित्य के अध्ययन से हमें मालूम होता हैं कि वे समाज के ऐसे अनछुए पहलूओं से हमें परिचित करवाती है, जहाँ तक हमारी सोच पहुँच भी नहीं पाती। ऐसे रचनाकार हमारे साहित्य जगत में कम ही देखने को मिनते है, जो जीवन के वास्तविक सत्यों को पाठकों के सामने रखते हैं।

संदर्भ सूची

1. अंजु दुआ जैमिनी, *'चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में संघर्ष और संचेतना'*, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 20.
2. चित्रा मुद्गल, *'मेरे साक्षात्कार',* सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 62.
3. अंजु दुआ जैमिनी, *'चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में संघर्ष और संचेतना',* सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 88.
4. मुद्गल चित्रा, *'मेरे साक्षात्कार',* सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 13.
5. मुद्गल चित्रा, 'आवां', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 37.
6. मुद्गल चित्रा, 'गिलिगडु', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 31.
7. मुद्गल चित्रा, 'मेरे साक्षात्कार', सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 39.

****